आर. एन. आई. नं. : RAJHIN/2013/59711

पोस्टल रजि. नं. : बीकानेर/146/2021-23

# पशु पालन नए आयाम

वर्ष : 9 अंक : 12 अगस्त, 2022 मूल्य : ₹2.00

।पशुधनं नित्यं सर्वलोकोपकारकम्।

## मार्गदर्शन : कुलपति प्रो. (डॉ.) सतीश के. गर्ग

## कुलपति सन्देश

## पर्यावरण संरक्षण हेतु वृक्षारोपण एक महत्वपूर्ण कदम

प्राचीन काल से ही पर्यावरण का बहुत महत्व रहा है। पर्यावरण को सुरक्षित रखना उतना ही जरूरी है जितना हम अपने आप को रखते हैं। मानव व पर्यावरण एक दूसरे के पूरक है उन्हें अलग करना बहुत कठिन है। जिस दिन पर्यावरण का अस्तित्व मिट जायेगा उस दिन मानव जाति का अस्तित्व भी खतरे में होगा। यह एक आधार भूत सत्य है। वास्तव में प्रकृति का संरक्षण ही उसका पूजन है, परन्तु मानव ने अपने स्वार्थ के लिए प्राकृतिक संसाधनों के अत्याधिक तथा अनावश्यक दोहन से पर्यावरण संकट की नई चुनौती को जन्म दिया है। आज वायु प्रदूषण, जल व मिट्टी प्रदूषण, तापीय, रेडियोधर्मी, नगरीय प्रदूषण, नदियों व नालों में प्रदूषण के कारण जलवायु परिवर्तन तथा ग्लोबल वार्मिंग जैसे खतरे लगातार दस्तक दे रहे हैं। इस कारण चक्रवात, बाढ़, सूखा, भूकम्प की घटनाएं बढ़ती जा रही हैं। बढ़ती आबादी की जरूरतों को पूरा करने, बढ़ते शहरीकरण व औद्योगिकरण के लिए वृक्षों की अंधाधुंध कटाई की जा रही है व चट्टानों को तोड़ा जा रहा है। इस कारण वन क्षेत्र घट रहा है। इस घटते वन क्षेत्र को राष्ट्रीय लक्ष्य 33.3 प्रतिशत तक लाने के लिए वृक्षारोपण करना अति आवश्यक है। भारतीय संस्कृति में पीपल, कंदभ, बील, अशोक आदि वृक्षों को पूजा जाता है। भारतीय समाज ने आदिकाल से ही पर्यावरण संरक्षण को महत्व दिया है अतः वृक्षारोपण हमारे जीवन के लिए अत्यन्त उपयोगी है। जनमानस में पर्यावरण के संरक्षण के प्रति जागरूकता बढ़ रही है तथा कोविड़ जैसी महामारी के समय आमजन ने स्वच्छ पर्यावरण की महत्ता को समझा है। किसान व पशुपालक भाई भी पर्यावरण संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। किसान भाइयों को पर्यावरण संरक्षण के लिए जैविक खेती पर जोर देना चाहिए तथा कृषि वानिकी को अपनाकर खेतों की मेडो, गांवो की गोचर भूमि आदि पर वृक्ष लगाकर पर्यावरण सरंक्षण में महत्वपूर्ण योगदान दे सकते हैं। बहुत सी सरकारी व गैर सरकारी संस्थाएं वृक्षारापेण की मुहिम चला रही हैं। विश्वविद्यालय भी पर्यावरण संरक्षण में महत्वपूर्ण योगदान दे रहा है। विश्वविद्यालय की सभी इकाइयों द्वारा सघन वृक्षारोपण कार्यक्रम आयोजित किये जा रहे हैं तथा विभिन्न स्थानों पर पौधारोपण किया जा रहा है। अभी मानसून का दौर चल रहा है। अतः आओ हम सभी मिलकर अधिक से अधिक वृक्षारोपण करें तथा पर्यावरण को हरा–भरा एवं सुरक्षित बनाएं।

**प्रो. (डॉ.) सतीश कुमार गर्ग**

किसी देश की महानता का आंकलन इस बात से किया जा सकता है कि लोग पशुओं से कैसा व्यवहार करते हैं।

–महात्मा गांधी

## विश्वविद्यालय समाचार

# वेटरनरी विश्वविद्यालय, बीकानेर में संविधान पार्क का लोकार्पण

## युवाओं में लोकतांत्रिक आस्था को मजबूत करेंगे संविधान पार्क – राज्यपाल

राज्यपाल श्री कलराज मिश्र ने कहा है कि संविधान पार्क विश्वविद्यालयों में पढ़ने वाली युवा पीढ़ी में लोकतांत्रिक आस्था को मजबूत करने में सहायक होंगे। उन्होंने कहा कि इससे युवा राष्ट्र बोध से जुड़ कर देशहित में अपने कर्तव्यों के निर्वहन को प्रेरित होंगे। राज्यपाल श्री मिश्र 29 जुलाई को राजस्थान पशु चिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, बीकानेर में नवनिर्मित संविधान पार्क के लोकार्पण के अवसर पर सम्बोधित कर रहे थे। उन्होंने यहां पारम्परिक पशुचिकित्सा पद्धति एवं वैकल्पिक औषधि विज्ञान केन्द्र का भी लोकार्पण किया। उन्होंने कहा कि प्रदेश के राजकीय विश्वविद्यालयों में संविधान पार्क धीरे–धीरे आकार ले रहे हैं, यह प्रसन्नता की बात है। राज्यपाल ने कहा कि इसके पीछे मूल भावना यह है कि देश के भावी नागरिक इन पार्कों का भ्रमण कर संविधान की उदात्त संस्कृति को प्रत्यक्ष अनुभव कर सकें उनमें मौलिक कर्तव्यों, नीति निर्देशक तत्वों का समावेश हो और वे देश के प्रति जिम्मेदारी का अहसास करें। राज्यपाल श्री मिश्र ने कहा कि राजस्थान की अर्थव्यवस्था में कृषि एवं पशुपालन की प्रमुख भूमिका है। उन्होंने कहा कि राज्य में पशुधन की संख्या तथा दुग्ध उत्पादन के ग्रामीण अर्थव्यवस्था में योगदान को ध्यान में रखते हुए विश्वविद्यालय नवाचार करे। उन्होंने कहा कि पशुपालकों को उन्नत नस्ल के पशु उपलब्ध हों और उनका समुचित रख–रखाव करते हुए वे नवीन तकनीकों से दुग्ध उत्पादन करें। इसके साथ ही, उत्पादों के विपणन के लिए भी पशुपालकों को सक्षम बनाने पर कार्य करने की जरूरत है। राज्यपाल ने विश्वविद्यालय में रिक्त पदों को भरने की कार्यवाही त्वरित पूरी किए जाने के निर्देश दिए। कृषि एवं पशुपालन मंत्री श्री लालचंद कटारिया ने कहा कि राज्य सरकार किसानों और पशुपालकों के कल्याण के लिए संकल्पबद्ध होकर कार्य कर रही है। उन्होंने कहा कि पशुपालन के विकास के लिए प्रदेश में मुख्यमंत्री पशुधन निःशुल्क दवा योजना, 102 मोबाइल पशु चिकित्सा सेवा, दुग्ध उत्पादक सहकारी संघों में दिए जा रहे दूध पर पशुपालकों को 5 रुपए प्रति लीटर अनुदान जैसे कई महत्वपूर्ण कदम उठाए गए हैं। कुलपति प्रो. सतीश के. गर्ग ने विश्वविद्यालय शिक्षा, अनुसंधान एवं प्रसार के क्षेत्र में विश्वविद्यालय की प्रगति से अवगत करवाया तथा छात्रों का इंटर्नशिप भत्ता बढाने एवं विश्वविद्यालय को दो डेयरी महाविद्यालय की सौगात प्रदान करने हेतु राज्य सरकार का आभार व्यक्त किया। इस अवसर पर राज्यपाल एवं कुलाधिपति ने राजुवास ऑफिसियल मोबाइल ऐप का लोकार्पण एवं राजुवास न्यूजलैटर के नवीन अंक एवं औषध सूचकांक पुस्तक का विमोचन किया। समारोह में राज्यपाल के प्रमुख सचिव सुबीर कुमार और राजुवास के संस्थापक कुलपति प्रो. ए.के. गहलोत, विशेषाधिकारी गोविंदराम जायसवाल मंचस्थ अतिथि रूप शामिल हुए। महापौर बीकानेर सुशीला कंवर राजपुरोहित, विश्वविद्यालय की प्रथम महिला श्रीमती मन्जु गर्ग, श्रीमती अरूणा गहलोत, स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय, बीकानेर के कुलपति प्रो. आर.पी. सिंह, महाराजा गंगासिंह विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. वी.के. सिंह, बीकानेर तकनीकी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. अम्बरीश एस. विद्यार्थी, जिला कलेक्टर श्री भगवती प्रसार कलाल एवं पुलिस अधीक्षक श्री योगेन्द्र यादव साक्षी बने। समारोह में जिले के प्रशासनिक एवं पुलिस अधिकारी, आई.सी.ए.आर. के निदेशक व अधिकारीगण, राजुवास के वित्तनियंत्रक, प्रताप सिंह पूनिया, डीन– डॉयरेक्टर, अधिकारी, विद्यार्थिगण एवं कर्मचारी शामिल हुए। राजुवास के कुलसचिव प्रो. आर.के. सिंह ने सभी का धन्यवाद ज्ञापित किया। डॉ. प्रतिष्ठा शर्मा ने कार्यक्रम का संचालन किया।

## छोटे पालतु पशुओं में पिनींग एवं प्लेटिंग तकनीक से फ्रेक्चर प्रबन्धन पर प्रशिक्षण

वेटरनरी विश्वविद्यालय में फील्ड पशुचिकित्सकों हेतु छोटे पालतु पशुओं में पिनींग एवं प्लेटिंग तकनीक द्वारा फ्रेक्चर प्रबन्धन के लिए पांच दिवसीय आर्थोपेडिक प्रशिक्षण 25 से 29 जुलाई तक आयोजित किया गया। समापन सत्र को सम्बोधित करते हुए राजुवास के संथापक एवं पूर्व कुलपति प्रो. ए.के. गहलोत ने डिमिस्का प्रोजेक्ट के तहत चल रहे प्रशिक्षण कों अत्यन्त उपयोगी बताया और कहा कि इससे सर्जरी के अत्याधुनिक पद्धतियों एवं उपचार उपकरणों कौशल निपुणता को बढ़ावा देना होगा। वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. सतीश के. गर्ग ने कहा कि इस प्रशिक्षण के माध्यम से पशुचिकित्सक छोटे पशुओं में सर्जरी हेतु निपुणता हासिल करेंगे जो कि उनकों स्वरोजगार हेतु भी प्रेरित करेगी। प्रशिक्षण के समन्वयक डॉ. प्रवीण बिश्नोई ने बताया कि मानव संसाधन विकास निदेशालय के अन्तर्गत डिमिस्का प्रोजेक्ट के तहत इस प्रशिक्षण में देश के विभिन्न राज्यों से कुल 20 पशुचिकित्सकों ने भाग लिया। प्रशिक्षण का आयोजन डॉ. अनिल बिश्नोई ने किया।

## विश्व जूनोसिस दिवस पर रेबीज वैक्सीनेशन शिविर का आयोजन

वेटरनरी विश्वविद्यालय एवं महावीर इंटरनेशनल सेवा संस्थान, बीकानेर के संयुक्त तत्वावधान में 'विश्व जुनोसिस दिवस' के अवसर पर श्वानों के लिए एक दिवसीय निःशुल्क रेबीज वैक्सीनेशन शिविर का आयोजन 6 जुलाई को वेटरनरी विश्वविद्यालय के क्लिनिक्स में किया गया। कुलपति प्रो. सतीश के. गर्ग ने श्वान को रेबीज निरोधक टीका लगाकर शिविर शुभारंभ किया। कुलपति ने कहा कि पूरे विश्व में हर वर्ष 6 जुलाई को विश्व जूनोसिस दिवस मनाया जाता है और जनमानस में इन रोगों के प्रति जागरूकता फैलाना इसका प्रमुख उद्देश्य है। प्रो. जे.एस. मेहता, निदेशक क्लिनिक ने बताया कि शिविर के दौरान कुल 32 श्वानों को निःशुल्क टीका लगाया गया। इस अवसर पर आमजन में रेबीज के प्रति जागरूगता उत्पन्न करने हेतु एक गोष्ठी का आयोजन भी किया गया। क्लिनिकल इंचार्ज प्रो. प्रवीण बिश्नोई ने वैक्सीनेशन शिविर का संचालन किया। पूर्व निदेशक क्लिनिक्स प्रो. आर.के. तंवर ने रेबीज पर विद्यार्थियों को प्रस्तुतिकरण दिया।

## यूनिवर्सिटी सोशल रिस्पोंसिबिलिटी

## वेटरनरी विश्वविद्यालय द्वारा गाढ़वाला में पौधारोपण

वेटरनरी विश्वविद्यालय द्वारा यूनिवर्सिटी सोशल रिस्पांसीबिलिटी के अंतर्गत गोद लिए गांव गाढ़वाला में 30 जुलाई को पौधारोपण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। यूनिवर्सिटी सोशल रिस्पांसीबिलिटी के नोडल अधिकारी, प्रसार शिक्षा निदेशक प्रो. राजेश कुमार धूड़िया ने राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, गाढ़वाला परिसर मेंश्शीशम का पौधा लगाकर कार्यक्रम की शुरूआत की। इस अवसर पर उन्होंने विद्यालय के विद्यार्थियों को पेड़ों का मानव जीवन में महत्व बताते हुए अपने जन्म दिवस पर एक पौधा लगाने तथा उसकों संरक्षित करने का संकल्प दिलाया। इस कार्यक्रम के दौरान विभिन्न किस्मों शीशम, गुलमोहर, नीम, अनार, जामुन, नींबू, अमरूद, पीपल, ऑवला के छायादार, फलदार तथा फूलदार पौधे लगाए गये। यूथ एण्ड इको क्लब की प्रभारी मंजू पालीवाल ने पौधा रोपण कार्यक्रम में सक्रिय भूमिका निभाई। कार्यक्रम समन्वयक डॉ. नीरज कुमार शर्मा ने अभियान का संचालन किया। इस अवसर पर डॉ. देवीसिंह सहायक आचार्य, पशुचिकित्सा एवं पशु पालन प्रसार शिक्षा भी उपस्थित रहे।

## विश्व जूनोसिस दिवस पर स्कूली विद्यार्थियों के लिए जागरूकता कार्यक्रम

पशु जैव चिकित्सा अपशिष्ट निष्पादन एवं प्रौद्योगिकी केन्द्र द्वारा विश्व जूनोसिस दिवस के अवसर पर 6 जुलाई को संवित शिक्षण संस्थान सीनियर सैकण्डरी स्कूल, बीकानेर में पशुओं से फैलने वाली बीमारी के बारे में जागरूक किया गया। केन्द्र की मुख्य अन्वेषक डॉ. दीपिका धूड़िया ने विद्यार्थियों को पशुओं से मनुष्य में फैलने वाले रोगों से बचाव के बारे में जानकारी दी। डॉ. दीपिका धूड़िया ने बताया कि जूनोसिस रोगों की रोकथाम एवं नियत्रंण के लिए उचित स्वच्छता बनाए रखना जरूरी है। पशुओं के संपर्क में आने के बाद अपने हाथ धोना, जूनोटिक रोगों के सामुदायिक प्रसार को कम कर सकता है। पालतू पशुओं को समय पर जरूरी वैक्सीन लगायें। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए शिक्षाविद् डॉ. अभय सिंह टाक ने पशु संरक्षण पर बल देते हुए कहा कि पशुओं के प्रति आदर का भाव रखें किंतु समदर्शी बनें समवर्ती नही। इस अवसर पर प्रधानाचार्य श्रीमती शीतल कंवर तथा स्नातकोत्तर विद्यार्थी डॉ. हेमलता, डॉ. माया, डॉ. मनोज कलवाणिया भी मौजूद रहें।

# पशुपालक प्रशिक्षण समाचार

## i'k foKku dUæ] jrux< ¼p:½

पशु विज्ञान केन्द्र, रतनगढ़ द्वारा 30 जुलाई को एक दिवसीय ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर में 21 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

## i'k foKku dUæ] ckdfy;k ¼ukxkj½

पशु विज्ञान केन्द्र, बाकलिया–लाड़नू द्वारा 28 जुलाई को एक दिवसीय ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर में 18 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

## i'k foKku dUæ] Vkd

पशु विज्ञान केन्द्र, टोंक द्वारा 12, 19, 21, 25 एवं 28 जुलाई को एक दिवसीय ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 125 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

## i'k foKku dUæ] yudj.klj ¼chdkuj½

पशु विज्ञान केन्द्र, लूनकरणसर (बीकानेर) द्वारा 26, 28 एवं 30 जुलाई को ऑनलाइन एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 108 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।0

## i'k foKku dUæ] dkVk

पशु विज्ञान केन्द्र, कोटा द्वारा 7, 15, 20, 26 एवं 27 जुलाई को एक दिवसीय ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 123 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

## i'k foKku dUæ] ck tUnk ¼fpRrkMx<½

पशु विज्ञान केन्द्र, बोजुन्दा (चित्तौड़गढ़) द्वारा 27 एवं 29 जुलाई को एक दिवसीय ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 55 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

## i'k foKku dUæ] >>u

पशु विज्ञान केन्द्र, झुंझुनूं द्वारा 6, 11 एवं 22 जुलाई को एक दिवसीय ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों से 84 पशुपालक एवं कृषक लाभान्वित हुए।

## i'k foKku dUæ] lijrx< ¼Jhxxkuxj½

पशु विज्ञान केन्द्र, सूरतगढ द्वारा 11, 14, 20 एवं 27 जुलाई को एक दिवसीय ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविर एवं 6 जुलाई .को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 191 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

## i'k foKku dUæ] /kkyij

पशु विज्ञान केन्द्र, धौलपुर द्वारा दिनांक 27 एवं 29 जुलाई को गांव लुहारी एवं डोडी का पुरा गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन प्रशिक्षण शिविरों में कुल 60 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

## i'k foKku dUæ] flj kgh

पशु विज्ञान केन्द्र, सिरोही द्वारा 13 जुलाई को एक दिवसीय ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों से 19 पशुपालक एवं कृषक लाभान्वित हुए।

## i'k foKku dUæ] dEgj ¼Hkjrij½

पशु विज्ञान केन्द्र, कुम्हेर (भरतपुर) द्वारा दिनांक 19, 21, 26 एवं 28 जुलाई को गांव कोरेर, कासोट, साजोला एवं सोनारी में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। इस प्रशिक्षण शिविर में 72 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

## i'k foKku dUæ] tkcuj

पशु विज्ञान केन्द्र, जोबनेर द्वारा 25, 26, 28, 29 एवं 30 जुलाई को एक दिवसीय ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 88 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

## Ñf"k foKku dUæ] ukgj ¼guekux<½

कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर जिला हनुमानगढ़ द्वारा भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली के 94वें स्थापना दिवस के अवसर पर 16 जुलाई को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय कृषक पशुपालक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस संगोष्ठी में 55 किसानों एवं पशुपालकों ने भाग लिया।

# बारिश के मौसम में पशुओं की सेहत का रखें ख्याल

इस वर्ष राजस्थान में मानसून का प्रवेश देरी से हुआ है अगस्त माह में प्रदेश में तेज बारिश हुई है ऐसे में गर्मी और नमी के कारण पशुओं के रोग ग्रसित होने की संभावना कई गुना बढ़ जाती है। बरसात के मौसम में पशु आवास के आसपास पानी का ठहराव अनेकों रोगों को जन्म देता है। ऐसे में इस मौसम में पशु आवास प्रबंधन पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। पशु आवास सूखा, आरामदेह व हवादार होना चाहिए अतः पशुपालक पशु आवास में पानी के प्रवेश की रोकथाम के उपाय कर लेवें। अगर पशु आवास की खिड़कियां दरवाजे टूटे हो तो उसे ठीक करवा लें। बरसात में पशुओं को भीगने से बचाएं। बरसात के मौसम में पशु गंदे पानी में न जायें। पशु आवास में पशु के मलमूत्र के निकासी का उचित प्रबंध होना चाहियें, पशु आवास को दिन में एक बार फिनाइल अथवा जीवननाशक घोल से अवश्य साफ करना चाहिए। पशु आवास में पानी व कीचड़ के कारण पशुओं को थनैला रोग, खुरों का सड़ना, कोक्सिडियोसिस आदि रोगों की संभावना भी बढ़ जाती है। थनैला रोग से बचाव के लिए पशु के बैठने के स्थान को सूखा रखें, पशु के थनों को दूध दुहने के पहले व बाद में जीवाणुनाशक घोल से अवश्य धोवे। खुरों को सड़ने से बचाने के लिए पशु आवास में प्रवेश वाले स्थान पर नाली बनाकर उसमें चूना व जीवाणुनाशक घोल दाल दें जिससे पशु के खुरों का विसंक्रमण हो सकें। इसके अतिरिक्त गीले फर्श पर पशु के फिसलने से चोट की संभावना भी रहती हैं। बरसात के पानी से पशु आवास आस–पास मच्छर, मक्खियों व चिंचड़ का प्रकोप भी बढ़ जाता है जो कि अनेकों बीमारियों जैसे ब्रुसेलोसिस, बबेसिओसिस, थैलेरिओसिस और लेश्मेनिओसिस आदि रोगों के वाहक का कार्य करते हैं और इन रोगों को फैलाते हैं। पशु को बरसात में सुपाच्य संतुलित आहार दें जिसमे 60 प्रतिशत हरा चारा और 40 प्रतिशत सूखा चारा होना चाहिए। साथ में रोज 30–40 ग्राम सादा नमक और 25–35 ग्राम खनिज मिश्रण खिलाना चाहिए। इसके अतिरिक्त बरसात के मौसम में घास बहुतायत से उत्पन्न होती है और पशु को भरपेट हरा चारा आसानी से मिल जाता है। परंतु इस घास मे पानी अधिक और कम पोषक तत्व ओर रेशे होते है जो पशु के पाचन के लिए उचित नहीं होता और इसलिए भी इस मौसम मे पशु को दस्त लग जाते हैं। इसलिए पशुपालकों के लिए यह जरूरी हो जाता है कि हरी घास को पहले काट लें उसे थोड़ा धूप में सुखा लें फिर ही पशुओं को दें। इसके अतिरिक्त पशुओं को केवल हरा चारा भरपेट नहीं दे व उन्हें हरे चारे के साथ सूखा चारा अवश्य दें। बरसात के मौसम में चारे व दाने के भंडारण का भी विशेष ध्यान रखें यदि भंडारीत चारे व दाने में बरसात का पानी चला गया तो इसमें फफूंदी लग सकती है और यदि ऐसा आहार पशु खा लेते हैं तो उसे अफलाटॉक्सिकोसिस नामक विषाक्तता हो सकती है जिससे पशु की मृत्यु भी हो सकती है। पशुओं को साफ एवं ताजा पानी पिलाएं। बरसात का मौसम पशु की पाचन प्रक्रिया के साथ–साथ रोग प्रतिरोधक क्षमता को प्रभावित करता है। कमजोर रोग प्रतिरोधक क्षमता के कारण पशु अनेकों संक्रामक रोगों जैसे गलघोटू, लंगड़ा बुखार, खुरपका–मुंहपका, निमोनिया आदि से ग्रसित हो जाते हैं। इन लोगों की रोकथाम के लिए पशुओं का टीकाकरण अवश्य करवाएं साथ ही कमजोर प्रतिरक्षा के कारण पशु अन्तः व बाह्य परजीवियों के प्रकोप से भी ग्रसित हो जाता है। इसके बचाव हेतु पशुपालक पशुओं का नियमित अवश्य करवाएं। यदि इस मौसम में अन्य कोई विकार पशुधन में उत्पन्न होते है तो तुरंत पशु चिकित्सक की सलाह लेकर उपचार करें।

**डॉ. दीपिका धूड़िया**
**सहायक प्राध्यापक, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर**

# सर्वाधिक सम्भावित पशु रोग पूर्वानुमान–अगस्त, 2022

| पशु रोग | पशु | अत्यधिक संभावना | अधिक संभावना | मध्यम संभावना | बहुत कम संभावना |
|---|---|---|---|---|---|
| ब्लेक क्वाटर (बी.क्यु.) | गाय भैंस | – | – | – | जयपुर, अलवर, बांसवाड़ा, चूरू |
| ब्लू टंग रोग | भेड़ | – | – | जैसलमेर | अजमेर, अलवर, बांसवाड़ा, बाड़मेर, बारां, भरतपुर, भीलवाड़ा, बीकानेर, पाली, उदयपुर, चित्तौड़गढ़, दौसा धौलपुर, डूंगरपुर, गंगानगर, हनुमानगढ़, जयपुर, जालोर, झुंझुनू, करोली, सीकर, झालावाड़, जोधपुर, नागौर, बीकानेर, जोधपुर, राजसमंद, चूरू |
| फड़किया रोग | भेड़, बकरी | जोधपुर | – | – | – |
| गलघोंटू रोग | गाय, भैंस | अलवर | बारां कोटा | – | अजमेर, बांसवाड़ा, भरतपुर, भीलवाड़ा, बीकानेर, बूंदी, चित्तौड़गढ़, दौसा, धौलपुर, डूंगरपुर, गंगानगर, हनुमानगढ़, जयपुर, जालोर, सिरोही, झालावाड़, प्रतापगढ़, सवाई माधोपुर, टोंक, उदयपुर |
| तिबरसा | गाय, भैंस, ऊँट | बारां | कोटा | – | – |
| खुरपका–मुंहपका रोग | गाय, भैंस, भेड़, बकरी, ऊंट | – | – | – | बारां, भीलवाड़ा, गंगानगर, हनुमानगढ़, कोटा, राजसमंद |
| फेशिओलोसिस | गाय, भैंस, भेड़, बकरी | उदयपुर | – | – | – |

**विस्तृत जानकारी के लिए सम्पर्क करें – प्रो. आर.के. सिंह, अधिष्ठाता, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर, एवं डॉ. जे.पी. कच्छावा, प्रभारी अधिकारी, एपेक्स सेन्टर। फोन नं. 0151-2543419, 2544243, 2201183 टोल फ्री नम्बर 18001806224**

# भेड़ पालन : किसानों के लिए एक वरदान

**'' चोखी व्है दस छालियां, अेक भेलेरो ऊंट**
**खेत में होवे सौ खेजड़ी, काल काढ़ दा कूट ''**

अर्थात अकाल में भी अगर कृषक के पास दस अच्छी भेड़–बकरियां, एक स्वस्थ ऊंट तथा खेत में सौ वृक्ष खेजड़ी के हो तो वह उस कठिन समय को भी वह कूट–कूटकर निकाल सकता है।

राजस्थान में भेड़पालन का विशेष महत्व है। पश्चिमी राजस्थान में कृषि के साथ ही भूमिहीन किसानों और खेतीहर मजदूरों की जीविकोपार्जन का एक मुख्य आधार भेड़पालन भी है। शुष्क जलवायु तथा मरूस्थल में भी भेड़पालन किसानों के लिए सुगम है। राजस्थान में भेड़ो की मुख्य रूप से आठ नस्लें चोकला, नाली, मालपुरा, सोनाड़ी, मारवाड़ी, जैसलमेरी, मगरा तथा पूगल हैं। भेड़पालन किसान को कम लागत व सीमित साधनों में भी लगातार आय प्रदान करने का महत्वपूर्ण स्त्रोत है। भेड़पालन प्रारम्भ करने से पहले किसानों/पशुपालकों को निम्नलिखित बिन्दुओं पर ध्यान देना आवश्यक है।

mÌs';%& पशुपालक किस उद्देश्य या किय ध्येय के लिए भेड़पालन करना चाहता है इस बात पर नस्ल का चयन निर्भर करता है।

uLy%& भेड़ की नस्ल का चयन स्थान विशेष की जलवायु तथा क्षेत्र विशेष में नस्ल की उपयोगिता पर आधारित होना आवश्यक है। चूंकि विपरीत जलवायु की नस्ल का चयन पशुपालक को आर्थिक रूप से लाभ नहीं दे पाता। भेड़ अपने प्राकृतिक जलवायु में ही अधिकतम उत्पादन दे पाती है, नस्ल चयन में उपरोक्त बात का ध्यान रखना आवश्यक है।

Ik'kckMk%& रेवड़ रखने का स्थान ऊंचाई पर स्थित होना आवश्यक है, ताकि वर्षा का जल जमा न हो सके। बाड़े में मिट्टी के साथ चूना तथा कीटनाशक मिलाने चाहिए ताकि बाह्य परजीवियों को कम किया जा सके। रेवड़ में गर्मी तथा तापघात से बचने के उपाय होने आवश्यक है। बाड़े के आसपास छायादार पेड़ भी ठड़क पैदा करने में समर्थ है अतः अधिक से अधिक पेड़ लगाने चाहिए।

fMfiix Vd%& भेड़ो को नहलाने के लिए बाड़े के पास जलकुंड की व्यवस्था आवश्यक है। भेड़ो को ऊन कतरने के बाद जलकुंड में दवा डालकर नहलाना चाहिए। ऐसा वर्ष में दो बार करना महत्वपूर्ण है।

[kj fMfix Vd :– बाड़े के मुख्य द्वार पर 5 फुट चौड़ा, 4 फुट लम्बा व 6 ईंच गहरा पक्का खुर ड़िपिंग टैंक होना चाहिए। वर्षा के मौसम में भेड़ों को खुरपका बीमारी से बचाने के लिए इस टैंक में नीलाथोथा के पानी को भरकर भेड़ों के खुर उसके अंदर भिगो देने चाहिए।

iks"k.k%& रेवड़ को प्रतिदिन 8–10 घण्टे चारागाह में चराई के लिए भेजना चाहिए। रेगिस्तान में गर्मी अधिक होने के कारण रेवड़ को सुबह जल्दी तथा सांयः देर तक चराना चाहिए। बाड़े में भी चारा व दाने के लिए उपयुक्त व्यवस्था होनी चाहिए। चारागाह के अतिरिक्त भेड़ों को पूरक आहार देना आवश्यक है। भेड़ों को उचित मात्रा में पोषक तत्व की प्राप्ति सुनिश्चित करने हेतु साधारण नमक व खनिज लवण मिश्रण से बनी ईंटे पशुओं के चाटने हेतु उचित ऊंचाई पर रखनी चाहिए जिससे लवण व विटामिन की पूर्ति हो सके। भेड़ों की पानी की टंकी चूने से पूती हुई हो तथा सप्ताह में एक बार साफ करना आवश्यक है।

LokLFk :– ''टीकाकरण'' पशु स्वास्थ का अहम् अंग है। पशु को स्वस्थ और उत्पादक बनाएं रखने हेतु समय–समय पर भेड़ों को संक्रामक रोगों के रोग निरोधक जैसे फिड़किया, भेड़ माता, खुरपका–मुंहपका आदि टीके लगवाने चाहिए। बाड़े के अंदर बीमार पशुओं को अलग रखने की उचित व्यवस्था होनी चाहिए। अस्वस्थ पशुओं की पहचान कर उन्हें पशुचिकित्सक से उपचार करवाना चाहिए। प्रत्येक तीन माह के अंतराल पर पशुओं को कृमिनाशक दवा पिलानी चाहिए जिससे वे अंतःपरजीवी संक्रमण से बचे रहें। वर्ष में दो–तीन बार कीटनाशक दवा का घोल बनाकर नहलाने से बाह्य परजीवी रोगों से बचाव किया जा सकता है। साथ ही यह विशेष ध्यान रखे कि पशु उपचार तथा पशु परजीवी निंयत्रण हेतु किसी भी प्रकार की दवा का प्रयोग पशुचिकित्सक की देखरेख अथवा सलाहनुसार ही करना चाहिए।

iztuu%– भेड़ को स्वस्थ मेमनें को जन्म देने हेतु सही उम्र व सही वजन प्राप्त कर लेने पर ही गर्भधारण हेतु छोड़ना चाहिए।

- मेढ़े का चयन– अच्छी वंशावली वाले मेढ़े का चयन अत्यंत महत्वपूर्ण है चूंकि इसी पर रेवड़ की उत्पादकता निर्भर करती है। दो–चार वर्ष के स्वस्थ मेढ़े को निश्चित अंतराल पर ही रेवड़ में मादा के साथ प्रजनन हेतु खुला छोड़ना चाहिए। एक ही रेवड़ में बार–बार प्रजनन को रोकने हेतु (अंतःप्रजनन) भेड़पालक को अपने मेढ़े को उपयोग के बाद किसी दूसरे रेवड़ के मेढ़े से अपना मेढ़ा बदल लेना चाहिए। मेढ़े को पूर्ण पोषण देने हेतु चराई के अलावा 400–500 ग्राम (आधा किलो) दाना अधिक देना चाहिए।
- लैम्बिंग पैन (बच्चा जनने का कक्ष) :– भेड़ को बच्चा देने के एक दिन पहले व तीन दिन बाद तक इसी कक्ष में रखना चाहिए।
- मेमनें का रखरखावः– ब्याने के बाद बच्चे के नथुनों को साफ करना चाहिए ताकि वह भली प्रकार श्वास ले सके।
- मेमने को साफ और सूखे कपड़े से साफ करके भेड़ के सामने छोड़ना चाहिए जिससे बच्चे के शरीर में खून का बहाव ठीक तरीके से हो।
- मेमनें को सीमित मात्रा में मां का दूध देना चाहिए परन्तु दस्त न हो जाए इस बात का विशेष ध्यान रखना चाहिए।
- मेमनें को 15–20 दिन की आयु पर थोड़ा–थोड़ा चारा देना चाहिए। लवण व विटामीन की पूर्ति हेतु साधारण नमक व खनिज लवण युक्त ईंटे भी चाटने के लिए रखनी चाहिए।


**डॉ. सोनिया शर्मा**
**वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर ( 9460890812 )**

## पॉलीथीन : पशुओं के लिए जानलेवा

पॉलीथीन व अखाद्य पदार्थों को पशु क्यों खाते हैं ?

पशुओं द्वारा सामान्यतः पॉलीथीन एवं अन्य खाद्य पदार्थों को नहीं खाना चाहिए। पाईका रोग होने पर पशु मिट्टी व अन्य अखाद्य पदार्थ खाने लगता है जिसके प्रमुख कारण निम्न है :

पशु को संतुलित आहार नहीं मिलनेपर, पशु के शरीर में कई जरूरी तत्व, खनिज लवण आदि की कमी हो जाती है। पशु शरीर में विशेषकर फास्फोरस व कैल्शियम तत्व की कमी के कारण पाईका रोग हो जाता है। जिसमें पशु मिट्टी व अन्य अखाद्य पदार्थ खाने लगता है। अन्तः परजीवी व बाह्य परजीवी भी पाईका रोग में सहायक होते हैं। पशुओं को पशुपालक संतुलित एवं पर्याप्त आहार उपलब्ध नहीं कराते हैं एवं चरने के लिए खुला छोड़ देते हैं। चारागाह के अभाव में पशु आवासीय क्षेत्रों में घूमते हैं। आवासीय क्षेत्रों में खाद्य सामग्री जैसे सब्जियां, फल आदि के अवशेषों को पालिथिन की थैली में बन्द कर फेंके जाने से पशु इन्हें थैली सहित खा लेता है।

ikyhFkhu@lykfLVd [kk;s i'kq e jgx d y{k.k % अधिक मात्रा में पॉलीथीन व प्लास्टिक खाने पर ये पशु के पेट (रूमन) में एकत्रित हो जाती है। पॉलीथीन को पशु पचा नहीं सकते हैं। पशु को भूख कम लगती है व कमजोर हो जाता है। बार–बार आफरा आता है व पेट फूला हुआ रहता है। अखाद्य पदार्थों में कील, सूई आदि होने पर यह पेट के माध्यम से हृदय या फैफड़ों को भी हानि पहुंचा कर घातक रोग उत्पन्न करते हैं।

mipkj % पॉलीथीन व अखाद्य पदार्थों के कारण होने वाले आफरे एवं अन्य रोगों का एकमात्र उपचार शल्य क्रिया द्वारा रूमनोटोमी ऑपरेशन कर इन्हें बाहर निकालने पर ही संभव है। पशु को संतुलित आहार उपलब्ध करायें। समय–समय पर कृमिनाशक दवा पिलावें। पाइका रोग (मिट्टी व अन्य अखाद्य पदार्थों के खाने की स्थिति) होने पर पशु चिकित्सक से उपचार करायें एवं पर्याप्त मात्रा में मिनरल मिश्रण देवें।

पशुओं एवं पर्यावरण के लिए घातक पॉलीथीन के उपयोग प्रदेश में प्रतिबन्धित है जिसके तहत जुर्माना व जेल की सजा का प्रावधान भी किया गया है। पॉलीथीन/प्लास्टिक का उपयोग स्वयं न करें व किसी अन्य को भी न करने दें और पर्यावरण के साथ–साथ अपने पशुधन की रक्षा करें।

**डॉ. रावता राम**

**कृषि विज्ञान केन्द्र, गुढ़ामलानी, बाड़मेर**

## राज्य सरकार द्वारा पशुपालकों का होगा सम्मान

पशुपालन विभाग पशुपालकों में स्वस्थ प्रतिस्पर्धा की भावना पैदा करने के लिए उनका सम्मान करेगा। पशुपालक सम्मान योजना के अन्तर्गत प्रत्येक पंचायत समिति स्तर से एक–एक पशुपालक का चयन किया जाएगा। पंचायत समिति पर चयनित पशुपालकों में से दो–दो पशुपालकों का चयन जिला स्तर पर होगा। जिला स्तर पर चयनित पशुपालकों में से दो पशुपालक का चयन राज्य स्तर सम्मान के लिए होगा। इसके लिए आवेदन की अंतिम तिथि 31 अगस्त तक है। अधिक जानकारी के लिए नजदीकी पशुचिकित्सालय से सम्पर्क कर सकते है तथा विस्तृत जानकारी पशुपालन विभाग की वेबसाइट www.animalhusbandry.rajasthan.gov.in से भी ली जा सकती है।

# सफलता की कहानी

## बकरी पालन को अपनाकर लक्ष्मण बने प्रेरणा स्त्रोत

राजस्थान में कृषि एवं पशुपालन ही किसानों की आय का मुख्य स्त्रोत रहा है। बकरी पालन को अपनी आय का मुख्य स्त्रोत बनाकर सफल हुए बीकानेर जिले की लूणकरणसर तहसील के गांव रोझा के जागरूक एवं प्रगतिशील पशुपालक श्री लक्ष्मण नाई पुत्र गोपालराम साधारण परिवार से संबध रखते है। इन्होंने निरंतर पशु विज्ञान केन्द्र, लूणकरणसर के सम्पर्क में रहकर केन्द्र द्वारा दिये जा रहे विभिन्न प्रशिक्षणों में हिस्सा लेकर पशुपालन से सम्बन्धित विभिन्न जानकारियां प्राप्त करने तथा इन प्रशिक्षणों से प्रेरित होकर बकरी पालन व्यवसाय शुरू करने का निर्णय लिया। इन्होंने बकरी पालन का व्यवसाय 10 बकरियों से प्रारम्भ किया। व्यवसाय शुरू करने के पश्चात समय–समय पर पशु विज्ञान केन्द्र, लूणकरणसर से कृमिनाशक दवा का उपयोग, खनिज लवण का उपयोग, संतुलित आहार, पशुओं में टीकाकरण, पशु प्रबंधन आदि की जानकारियां लेते रहें साथ ही साथ केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा दिये गये सुझावों को अपनाये। आज इनके फार्म पर कुल 70 पशु है जिनमें 10 सिरोही नस्ल, 15 जमनापरी, 5 बारबरी एवं 40 देशी नस्ल के पशु है। लक्ष्मण अपने इस बकरी पालन व्यवसाय से लगभग 30,000 रू. प्रति माह आय प्राप्त कर रहे हैं। अपने फार्म पर पशुओं का रखरखाव, पोषण, साफ–सफाई इत्यादि स्वंय करते हैं। इनकी बकरियों में प्रजनन दर भी बहुत कम है एवं अच्छी साफ–सफाई एवं प्रबंधन के कारण इनके फार्म पर मृत्यु दर भी बहुत कम है। पशु विज्ञान केन्द्र, लूणकरणसर के विशेषज्ञों द्वारा समय–समय पर अपने फार्म का निरीक्षण करवाते रहते है। इन्होंने केन्द्र से प्रशिक्षण लेने के बाद अपने फार्म पर पशुओं के लिए अजोला घास यूनिट भी लगा रखी है। वह अपने इस बकरी पालन व्यवसाय से बहुत खुश है एवं अपने इस व्यवसाय को काफी आगे ले जाना चाहते हैं। लक्ष्मण अपनी इस सफलता का श्रेय पशु विज्ञान केन्द्र, लूणकरणसर को देते हैं।

**सम्पर्क- लक्ष्मण नाई, गांव रोझा**

**तहसील लूणकरणसर ( बीकानेर ) मो.9602612338**

## निदेशक की कलम से...

# पशुओं में फैल रही लम्पी स्कीन बीमारी से सावधानी बरतें

पशुओं में फैल रही लम्पी स्किन बीमारी (ढेलेदार त्वचा रोग) ने पशुपालकों की चिंता बढ़ा दी है। वातावरण में नमी व गर्मी बढ़ने के कारण यह बीमारी देश के विभिन्न प्रदेशों में जैसे मध्यप्रदेश, गुजरात, महाराष्ट्र, राजस्थान आदि राज्यों में फैली हुई है। यह पशुओं में तेजी से फैलने वाला विषाणुजनित गांठदार त्वचा रोग है। गांठदार त्वचा रोग अफ्रीका और पश्चिमी एशिया के कुछ हिस्सों में होने वाला स्थानीय रोग है जहां पर इस रोग के लक्षण पहली बार 1929 में देखे गये थे। भारत में इस बीमारी के वायरस की पहचान सबसे पहले अगस्त, 2019 में उड़ीसा में हुई थी। राजस्थान में यह बीमारी अभी जैसलमेर, बीकानेर, बाड़मेर, जोधपुर, सिरोही आदि जिलों में फैली हुई है। यह रोग मच्छरों, मक्खियों और जूं के साथ पशुओं की लार तथा दूषित जल एवं भोजन के माध्यम से एक पशु से दूसरे पशुओं में फैलता है। इस बीमारी में गायों में तेज बुखार, शरीर पर गांठें (मुख्य रूप से सिर, गर्दन, अंडकोष) व सम्पूर्ण शरीर पर बनती है। त्वचा के घाव कई दिनों तक बने रह सकते है। क्षेत्रीय लसिका ग्रन्थियां सूज जाती है। मादा पशुओं में गर्भपात हो सकता है। पशुओं में दूध की कमी, भूख नही लगना, आंख व नाक से पानी व श्वांस लेने में कठिनाई होती है। इस बीमारी का बचाव ही उपचार है। संक्रमित पशुओं को स्वस्थ पशुओं से अलग रखे। पशुओं के बाड़े में कीटनाशक दवाओं का छिड़काव करें। मच्छर, मक्खियों को दूर रखने के लिए फिनाइल आदि का छिड़काव करें। फार्म व पशुओं के बाड़ो के आसपास वेक्टर प्रजनन स्थलों को सीमित करें अर्थात साफ–सफाई का विशेष ध्यान रखें। इस रोग की विशेष औषधि नहीं होने के कारण पशुचिकित्सक से परामर्श पश्चात लक्षणात्मक उपचार करावें। पशुपालक भाई नए पशुओं को अन्य पशुओं से अलग रखें तथा प्रभावित क्षेत्रों से पशुओं की आवाजाही से बचे। इस बीमारी की रोकथाम हेतु टीकाकरण सबसे कारगर उपाय है। वर्तमान में बकरी के चेचक के टीके का प्रयोग इस रोग में उपयोगी सिद्ध हो रहा है। स्वस्थ पशुओं में रोग से बचाव के लिए टीकाकरण करवाया जाना सर्वोत्तम उपाय है। पशुपालक इस बीमारी से भयभीत न होकर पशुचिकित्सक से परामर्श लेकर उचित उपचार व बचाव करें।

**प्रो. (डॉ.) राजेश कुमार धूड़िया, निदेशक प्रसार शिक्षा, राजुवास, बीकानेर**

पशुचिकित्सा सम्बन्धी जानकारी
प्राप्त करने के लिए
**टोल फ्री हैल्पलाईन**
**1800 180 6224**

**''धीणे री बात्यां''**
पशुपालकों के लिए रेडियो कार्यक्रम
माह के तीसरे गुरुवार को
सायं 5.30 से 6.00 बजे तक
प्रदेश के 17 आकाशवाणी
केन्द्रों से प्रसारण

मुख्य संपादक
प्रो. (डॉ.) आर. के. धूड़िया
संपादक
डॉ. दीपिका धूड़िया
डॉ. मनोहर सैन
संकलन सहयोगी
सुरेन्द्र कुमार श्रीमाली
प्रसार शिक्षा निदेशालय
0151-2200505
email : deerajuvas@gmail.com
पत्रिका में प्रकाशित आलेख/विचार लेखकों के अपने हैं।

बुक पोस्ट

भारत सरकार की सेवार्थ

सेवा में

.....

.....

.....

स्वत्वाधिकारी डायरेक्टर एक्सटेंशन एजूकेशन, राजुवास, बीकानेर के लिए प्रकाशक, मुद्रक प्रो. ( डॉ. ) आर.के. धूड़िया द्वारा डायमंड प्रिन्टर्स एण्ड स्टेशनरी, नत्थूसर गेट, बीकानेर, राजस्थान से मुद्रित एवं डायरेक्टर एक्सटेंशन एजूकेशन, बिजेय भवन पैलेस, राजुवास, बीकानेर से प्रकाशित। सम्पादक : प्रो. ( डॉ. ) आर.के. धूड़िया